आरती श्री पद्मप्रभु भगवान की

आरती श्री जिन पद्म तुम्हारी, प्रगट हुए तुम अतिशय धारी॥
तिथि बैशाख पंचमी आई, जब तुम दर्श दिये जिनराई॥ आरती श्री..
धरन भूप के सुत कहलाये, सुसमा मात उदर प्रगटाये॥ आरती श्री..
कौशाम्बो भयो जन्म कल्याना, सुरपति तांडव निरत रचाया॥ आरती श्री..
काम क्रोध मोहादिक मारें, मान कषाय तजे तुम सारे॥ आरती श्री..
जग का जो अज्ञान अन्धियारा, ज्ञान-भान के किया उजियारा॥ आरती श्री..
जो यह आरती करे करावे, 'पूरन' नहिं भय रोग सतावै॥ आरती श्री..

भजन

म्हारा मनड़ा री प्रीत, थाँसु लागी म्हारा जिनवर जी,
मैं गुण थांका गावां जी॥
जनम जनम की मैं दुखियारी, जामन मरण मिटाओं,
म्हारा जिनवर जी।
देव कुदेवा न म्हें बहु सेया अंत सार नहीं पायों,
म्हारा जिनवर जी।
सांचा देव मिल्या थे हितकर ढूंढ़ ढूंढ़ कर हारी,
राम रतन जी जग में झूंटा, सांची शरण तिहारी,
म्हारा जिनवर जी॥